लोक-सभा वाद-विवाद

का

संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION

OF

4th

LOK SABHA DEBATES

[सातवां सत्र
Seventh Session]

[खंड 29 में अंक 51 से 62 तक हैं
Vol. XXIX contains 51-62]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

य : एक रुपया

Price : One Rupee

विषय सूची/CONTENTS

अंक 53, सोमवार, 5 मई, 1969/15 वैशाख, 1891 (शक)

No. 53 Monday, May 5, 1969/Vaishakh 15, 1891 (Saka)

विषय	Subject	
निधन सम्बन्धी उल्लेख/Statement relating to demise		
भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन का निधन	Demise of Dr. Zakir Husain, President of India	1
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	1
श्री मी० रु० मसानी	Shri M. R. Masani	2
श्री जगन्नाथ राव जोशी	Shri Jagannath Rao Joshi	2
श्री के० अंबाजागन	Shri K. Anbazhagan	2
श्री श्रीपद अमृत डांगे	Shri S. A. Dange	3
श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी	Shri Surendranath Dwivedy	3
श्री फ्रैंक एन्थनी	Shri Frank Anthony	3
श्री के० आनन्द नम्बियार	Shri Nambiar	3
श्री राम सेवक यादव	Shri Ram Sevak Yadav	4
श्री हुमायुन कबीर	Shri Humayun Kabir	4
श्री जी० भा० कृपालानी	Shri J. B. Kripalani	4
श्री एम० मुहम्मद इस्माइल	Shri M. Muhammad Ismail	4
श्री आनन्द नारायण मुल्ला	Shri A. N. Mulla	5
श्री कीकर सिंह	Shri Kikar Singh	5
श्री निर्मल चन्द चटर्जी	Shri N. C. Chatterjee	5
श्री प्रकाशवीर शास्त्री	Shri Prakash Vir Shastri	5
अध्यक्ष महोदय	Mr. Speaker	5

लोक-सभा
LOK SABHA

सोमवार, 5 मई, 1969/15 वैशाख, 1891 (शक)
Monday May 5, 1969/ Vaisakha 15, 1891 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।
The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

भारत के राष्ट्रपति, डा० जाकिर हुसैन का निधन

प्रधान मंत्री, अणु शक्ति मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : डा० जाकिर हुसैन के निर्धन से देश को गंभीर क्षति पहुँची है । वह हमारी परम्परागत सभ्यता के प्रतीक थे । उनके श्रेष्ठ व्यक्तव्य में हमें धीरता एवं सज्जनता का अनुपम सामंजस्य था और वे हमारी विविधता पूर्ण संस्कृति के उत्कृष्ट आदर्श थे ।

डा० जाकिर हुसैन जैसा महान तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व देश को सौभाग्य से ही मिलता है । वह महान विद्वान्, विचारक एवं अहितीय प्रतिभावान् लेखक थे । वह समान रूप से, जनसमुदाय तथा प्रकृति प्रेमी थे तथा सृजनात्मक कालाओं के प्रति उनकी तीव्र रूचि थी । देश के उच्चत्तम पद पर पहुँच कर भी उन्होंने विनम्रता के महान गुण को बनाए रखा तथा वह अपने आपको अध्यापक कहलाने में ही अपना गौरव अनुभव करते थे ।

उनके व्यक्तित्व पर इस्लाम तथा हमारे देश एवं विश्व के महान धर्मों की शिक्षा का प्रभाव पड़ा । महात्मा गांधी तथा अन्य स्वतंत्रता प्रेमियों और पाश्चात्य देशों की उदार तथा मानवीय विचारधारों एवं सभी देशों के महान कवियों तथा लेखकों की रचनाओं से उन्हें प्रेरणा ली थी । वह सब प्रकार की रुढ़ियों अथवा संकीर्णताओं से मुक्त थे ।

भारत के राष्ट्रपति के रुप में उन्होंने विश्व के राजनीतिज्ञों तथा जनता को अत्यधिक प्रभावित किया तथा अपने देश के प्रति अन्य देशों में भारत का सम्मान बढ़ाया और उन देशों की मैत्री अर्जित की ।

उनकी पार्थिव देह को आज सायंकाल उनकी प्रिय शैक्षणिक संस्था जामिया मिलिया में

दफनाया जाएगा। वह देश को एक उद्यान तथा पाठशाला बनाना चाहते थे। आज वह भौतिक रूप में हमारे मध्य विद्यमान नहीं हैं, परन्तु उनके साधुवचन, उनकी निष्ठा, अनुकम्पा एवं सहनशीलता के उदाहरण हमारे स्मृति-पटल पर अमिट रुप से बने रहेंगे और अतः वे हमारे अन्तः करण के भाग बन जायेंगे।

मैं सरकार की प्रमुख के रूप में, राष्ट्रपति के निधन पर शोक प्रकट करती हूँ। अपने कार्य काल की अल्प अवधि में, कठिन परिस्थितियों में वह मेरी सरकार की शक्ति के स्त्रोत थे। स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी महान सेवाओं को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

मैं सरकार की ओर से तथा सदन की ओर से प्रार्थना करती हूँ कि डा० जाकिर हुसैन के शोकाकुल परिवार को हमारा शोकसंदेश भेजा जाय।

मैं इस सम्बन्ध में एक संकल्प प्रस्तुत करती हूँ, "कि लोक-सभा, जो राष्ट्रीय दुःखद घटना के शोकाकुल वातावरण में समवेत हुई है, भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के अकस्मात निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है, और देश भक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्म निरपेक्षता तथा मानव मात्र की सेवा उनके उच्च आदर्शों के संवर्द्धन के लिए संकल्प करती है।"

श्री मी० रू० मसानी (राजकोट) : मैं सदन के नेता द्वारा व्यक्त भावनाओं में अपने दल की सहमति अभिव्यक्त करता हूँ।

जामिया मिलिया के दृढ़ आधार पर निर्माण में मुझे भी जाकिर साहब को थोड़ा सहयोग देने का सुअवसर मिला था।

वह भारतीय संस्कृति, देशभक्ति, सज्जनता तथा विनम्रता के प्रतीक थे। वह महान गांधी वादी थे तथा प्रजातंत्र में उनका अगाध विश्वास था।

डा० जाकिर हुसैन के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए आकाशवाणी से एक वक्ता ने ठीक ही कहा था कि डा० जाकिर हुसैन स्वभावतः अथवा मानसिक रूप से राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे।

राष्ट्रपति का कार्य-भार सम्भालने पर उन्होंने कहा कि :

"आज की परिस्थिति में हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम अधिक कार्य करें, हमारा कार्य शान्तिपूर्वक एवं निष्ठापूर्वक हो। हम अपनी जनता के सम्पूर्ण स्वाभाविक तथा सांस्कृतिक का ठोस तथा सुस्थिर रूप से पुनर्निर्माण करें।

Shri Jagannath Rao Joshi (Bhopal) : Dr. Zakir Husain was a great patriot, eminent educationist, and a man of talent. He was a great admirer of nature. He lived a simple life. He devotedly served the country and the people. He was a Member of Parliament, he also held the office of a Governor and ultimately he was honoured with the office of the President of this great country. He added to the prestige and dignity of that office. His great ideals shall ever remain a source of inspiration for all of us.

श्री के० अंबाजागन (तिरुचेंगोड) : हमारे राष्ट्रपति न केवल हमारे देश के अध्यक्ष थे

अपितु हमारी महानतम् परम्पराओं एवं हमारी मिली जुली संस्कृति के प्रतीक भी थे। उनके जीवन में सादगी थी, वह देखने में विनम्र थे, परन्तु उनके आदर्श महान और विचार उत्कृष्ट थे।

गाँधीजी से प्रभावित होने के बाद से वह देश के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेते रहे। उन्होंने देश में बुनियादी शिक्षा पद्धति की नींव रखी। वह एक सच्चे मुसलमान थे आर दूसरे लोगों की धार्मिक भावनाओं का आदर करते थे।

राष्ट्रपति के रूप में उनका सभी वर्गों के प्रति प्रेम था। उनके निधन से, हमने जनता की भलाई में सदा रहने वाले एक शान्तिप्रिय नेता को खो दिया है।

वह तमिल भाषा की प्राचीनता, उसके प्राचीन उच्च कोटी के साहित्य, आधुनिक विकास एवं इस महान देश की मिलीजुली संस्कृति में उसके योगदान की सदा प्रशंसा करते थे।

श्री श्री० अ० डांगे (बम्बई मध्य दक्षिण) : डा० जाकिर हुसैन ने 1920 में कालेज की शिक्षा छोड़कर गांधीजी द्वारा आरंभ किये गए राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिया भाग लेने लगे थे।

भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचन भारतीय जनता की धर्मनिरपेक्षता का प्रमाण है। उनके निधन से भारत के प्रजातन्त्रिक विकास को भारी क्षति पहुँची हैं।

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : डा० जाकिर हुसैन का जीवन अभावों, कष्टों एवं बलिदानों से पूर्ण था।

अपने बिगड़े हुए स्वास्थ्य की परवाह न करके उनका उत्तर-पूर्वीय सीमा प्रदेश, आसाम और नागालैंड की यात्रा करना, उनकी मानव-प्रियता एवं देश की राष्ट्रीय एकता में दृढ़निष्ठा प्रदर्शित करता है।

इस संकट काल में उनकी मृत्यु से हमारे राष्ट्र को गहरा धक्का लगा है।

श्री फ्रैंक एन्थनी : (नाम निर्देशित आंगल भारतीय) मैं सदन के नेता एवं अन्य सदस्यों द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ अपना शोक अभिव्यक्त करता हूँ।

उनके राष्ट्रपति के रूप में चुनाव से हमरी धर्मनिरपेक्षता में निष्ठा की पुष्टि होती है।

गौरवपूर्ण पदों पर आसीन रहने पर वह अपने आपको एक अध्यापक मानने में ही गर्व का अनुभव करते रहे।

वह मिलीजुली संस्कृति के प्रतीक थे तथा उनमें सच्चरित्रता, उच्चविचारक, सहनशीलता तथा मानवीयता के गुण विद्यमान थे।

परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री नम्बियार : (तिरुचि रापल्लि) : डा० जाकिर हुसैन की मृत्यु से हमनें एक महान

राष्ट्रवादी देशभक्त, शिक्षाशास्त्री एवं मानवतावादी महापुरुष को खो दिया है। राष्ट्रपति का कार्यभार सम्भालते ही उन्होंने घोषणा की थी सम्पूर्ण भारत मेरा घर है तथा इसकी समस्त जनता मेरा परिवार है। वह सदैव अपनी इस धारणा पर दृढ़ रहे।

मैं सदन के नेता द्वारा रखे संकल्प का हृदय से समर्थन करता हूँ

Shri Ram Sewak Yadev (Baranbanki) : Dr. Zakir Husain was a great symbol of truth, simplicity and secularism. The loss suffered by the nation due to his demise cannot easily be compensated.

I and my party fully associate with the sentiments of the Prime Minister and also support the resolution moved by her.

श्री हुमायून कबीर (बसीरहाट) : डा० जाकिर हुसैन की सार्वजनिक उपलब्धियां सर्व विदित हैं। वह पिछली कई शताब्दियों से विकसित हो रही अनेक महान संस्कृति के महान प्रतीक थे। इससे भी बढ़कर उनका व्यक्तित्व उच्च मानवीय गुणों से सम्पन्न था। उनका हृदय दया की भावनाओं से ओतप्रोत था।

जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया उसने उनमें आत्मीयता ही पाई। विनम्रता उनके जीवन का अंग बन चुकी थी।

श्री जी० भा० कृपालानी (गुना) : मैं प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ अपना भी शोक प्रकट करता हूं। मेरा किसी दल से सम्बन्ध नहीं इसलिए मैं राष्ट्र की ओर से बोल रहा हूँ।

उन्होंने यह महान निर्णय किया था कि शिक्षा क्षेत्र उनके जीवन का लक्ष्य हो। वह प्रकृति से, पुष्पों से चित्रों से, तथा पर्वत-शिखरों से प्यार करते थे जो कि मिली जुली संस्कृति का प्रतीक हैं। भारी संख्या में बहुमतों से उनका राष्ट्रपति चुना जाना बहुसंख्यक सम्प्रदाय के लिए गौरव की बात ही मानी जानी चाहिये।

उन्होंने राष्ट्र के अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि समझा तथा अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किए बिना दुर्गम स्थलों की यात्रा पर गए। इसलिए कहा जा सकता है कि उन्होंने देशहित में अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

मैं प्रस्तुत संकल्प का समर्थन करता हूँ।

श्री एम० मुहम्मद इस्माइल (मंजेरी) मैं अपने दल, मुस्लिम लीग की ओर से, डा० जाकिर हुसैन के निधन पर, इस सदन में व्यक्त भावनाओं का समर्थन करता हूँ।

वह महान विचारक थे तथा उनका ज्ञान व्यापक एवं विषद था परन्तु वह भाषणों पर अधिक विश्वास नहीं करते थे।

उन्होंने महान् पदों के उत्तरदायित्व को योग्यता पूर्वक निभाया। देश के सर्वोच्च पद पर पहुँच कर भी उनकी विनम्रता में कोई कमी नहीं आई।

उन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम में एक निष्ठावान सैनिक के रूप में कार्य किया। शिक्षा एवं मानवता के क्षेत्र में उनकी अपार देन रही।

Shri A. N. Mulla (Lucknow) : I am paying my tributes in Urdu as it was the language of Dr. Zakir Husain. Statements are being given in the countries of world in which the various qualities of the great man have been praised in various manners

Dr. Zakir Husain was a flower which was sent to the earth from the Heavens. It has now been taken back by the Altmighty. Let us preserve the odour it spread in our country through out his life.

Shri Kikar Singh (Bhatinda)* : The representatives of various Governments are arriving here to express their condolence on the sad demise of Dr. Zakir Hussain. Our leaders are today laying their tributes to the departed soul.

I pay tributes on behalf of my leader Sant Fateh Singhji, the entire Sikh community all the Punjabies and the country men. He was a worthy son of the country and a great lover of humanity.

*मूल पंजाबी के हिन्दी अनुवाद से अनूदित

Translated from the Hindi translation of original in Punjabi.

श्री नि० चं० चटर्जी (बर्दवान) : डा० जाकिर हुसैन का राष्ट्रपति के रूप में चुनाव, भारत में धर्मनिरपेक्ष प्रजातंत्र का उज्जवल उदाहरण है।

वह एक महान विचारक, वास्तविक शिक्षा शास्त्री, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ एवं सज्जन थे।

केन्द्र-राज्य सम्बन्ध आदि कठिन समस्याओं में वह हमारे पथ-प्रदर्शक थे। उनकी मृत्यु से देश, संसद एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को गंभीर क्षति पहुँची है।

Shri Prakash Vir Shastri (Hapur) : Dr. Zakir Husain was an ideal educationist, a great statesman and above all a great human being. Dr Zakir Husain was endowed with a heart which was moved whenever he saw the human beings in sufferings.

In the course of freedom movement, efforts were made to oppose the education system set by lord Mecaully. The setting up of Shanti Nikaten by Tagore, Kashi Vidyapeeth by Dr. Bhagwan Das, Gujrat Vidyapeeth by Mahatma Gandhi, Gurukul Kangri by Swami Shradhananda were various steps towards our National education programme. Jamia Millia formded by Dr. Zakir Husain is another step in the programme of National education. That institution is trying to give an ideal education system to the country.

He was not in faour of making the many speeches. He believed in work and as President of India preached for constructive work aiming at the welfare of common man.

अध्यक्ष महोदय : मैं प्रधान मंत्री, विरोधी दलों के नेताओं तथा अन्य सदस्यों द्वारा डा० जाकिर हुसैन के निधन पर व्यक्त भावनाओं के साथ अपना शोक भी प्रकट करता हूँ।

वह विनम्रता, धर्मनिरपेक्षता, प्रज्ञा एवं संस्कृति के प्रतीक थे। उनके निधन से देश को राजनीतिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपार क्षति पहुँची है।

क्या मैं ऐसा मानलू कि प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तुत संकल्प इस सदन को सर्व-सम्मति से स्वीकार्य है ?

माननीय सदस्य : जी हाँ !

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है, "कि लोक-सभा, जो राष्ट्रीय दुःखद घटना के शोकाकुल वातावरण में समवेत हुई है, भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के अकस्मात निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है, और देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता तथा मानवमात्र की सेवा के उनके उच्च आदर्शों के संवर्द्धन के लिए संकल्प करती है।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ
The motion was adopted

अध्यक्ष महोदय : अब सभा डा० जाकिर हुसैन के प्रति अपना शोक व्यक्त करने के लिए थोड़ी देर के लिए मौन खड़ी रहेगी।

इसके पश्चात सदस्य कुछ देर के लिए मौन खड़े रहे
The members then stood in silence for a short while

अध्यक्ष महोदय : मेरा सुझाव है कि हम सभी 12.30 म० प० राष्ट्रपति भवन जाकर दिवंगत राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन के प्रति इस सदन की श्रद्धांज्जलि अर्पित करें तथा उनके शव पर माला चढ़ाएं।

उनकी स्मृति में इस सदन को कल 11 बजे म० मू० तक स्थगित किया जाता है।

लोक सभा मंगलवार, 6 मई 16 वैशाख, 1891 **(शक) के** 1969/11 **बजे तक के लिये स्थगित हुई।**

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the clock on Tuesday, May 6, 1969/Vaisakha 16, 1891 (S)